मुलायम-अखिलेश जवाब

बलात्कार: सनातन भारतीय संस्कृति

समाजवाद की आड़ में अपराधवाद

-मनोज कुमार झा

देश में बलात्कार की बाढ़ थमने का नाम ही नहीं ले रही है। अभी हाल में हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश में हुए सामूहिक बलात्कार देशी-विदेशी मीडिया की सुर्खियों में छाए रहे।

यूपी के बदायूं में दो किशोरियों के साथ हुआ गैंगरेप ही चर्चित हुआ, क्योंकि आतताइयों ने मासूम बालिकाओं के साथ रेप के बाद उनकी हत्या कर लाशों को सरेआम पेड़ से लटका दिया। इसके पीछे उनका उद्देश्य शासन को चुनैती देना रहा होगा या पीड़िताओं के परिवार को आतंकित करना, यह आसानी से समझा जा सकता है। शासन की शह के बिना अपराधी इतने दुस्साहसी नहीं हो सकते कि बलात्कार और हत्या करने के बाद लाश को पेड़ से लटका दें।

यूपी में रेप की यह कोई पहली घटना नहीं है। इस पर तुर्रा यह कि सीएम अखिलेश यादव को इस बात का दुख है कि मीडिया यूपी में हो रही बलात्कार की घटनाओं को तो दिखा रहा है, जबकि दूसरे राज्यों में हो रही ऐसी घटनाओं को सामने नहीं लाता। इसका मतलब क्या ये है कि मीडिया को मुलायम-अखिलेश से दुश्मनी है। ऐसा हो नहीं सकता। मुलायम शुरू से ही मीडियाकर्मियों की 'सेवापानी' में कोई कसर नहीं छोड़ते रहे हैं। फिर, दूसरे राज्यों में भी अगर बलात्कार हो रहे हैं तो इसका मतलब ये नहीं कि यूपी में बलात्कार हों तो इसके लिए सीएम अखिलेश यादव को जिम्मेवार ठहराया जाए। बलात्कार होते हों, दंगे होते हों, दूसरे अपराध होते हों तो इसके लिए सीएम या राज्याधिकारी कैसे जिम्मेवार हो सकते हैं? वो तब जिम्मेवार होंगे जब स्वयं इन अपराधों में लिप्त हों जो वे नहीं हैं। फ़िर रेप एवं अन्य अपराधों के लिए सीएम अखिलेश या सपा प्रमुख मुलायम को जिम्मेवार ठहराना बहुत ही गलत है। यह लोकतंत्र के आधारभूत मानदंडों के विरुद्ध है। लोकतंत्र में हर बात के लिए जनता जिम्मेवार है। जिन लड़कियों का बलात्कार हुआ, उसके लिए संभव है, वो ख़ुद जिम्मेवार हों। हो सकता है, उनके कपड़े सही न हों, हाव-भाव गलत रहे हों। हो सकता है, उनका चरित्र संदिग्ध रहा हो। हो सकता है कि उनकी जवानी में कुछ ऐसी बात रही हो कि बलात्कारी अपनी वासना पर काबू नहीं रख पाए हों। फिर बलात्कार के बाद उन्हें महसूस हुआ हो कि इसके पीछे इन बालिकाओं की ही गलती रही है, इसलिए उन्हें सबसे बड़ा दंड, प्राणदंड दिया और दूसरे यह देख-जान सकें, सबक ले सकें, इसलिए पेड़ से उनकी लाश भी लटका दी है। बस इतनी-सी बात है। जाहिर है, इस पर इतना हंगामा करना लोकतंत्र के लिए सही नहीं होगा। मीडिया को अब जिम्मेवार हो जाना चाहिए। मीडिया ऐसी खबरों को बढ़ा-चढ़ाकर इसलिए भी दिखाता है कि लोग इनमें मज़ा लेते हैं और उसकी मार्केटिंग अच्छी होती है। लेकिन मीडिया अभी भी संभल जाए। मुलायम ने कठोर रवैया अपनाया तो मीडिया को सबक सिखाएंगे। मीडिया अपनी हद में रहे तो 'लोकतंत्र के पहरूए' मीडिया कर्मियों को रेवड़ियां भी बांटेंगे। जहां तक सोशल मीडिया का सवाल है तो यह हर किस्म के गैर जिम्मेवार और समाज विरोधी तत्वों का जमावड़ा है। यहां बैठे ठाले लोग कुछ भी बकते रहते हैं, उन पर कोई ध्यान नहीं देता। वैसे, वक़्त आने पर मुलायम इन्हें भी सबक सिखाएंगे।

बहरहाल, वे आशंकित इस बात से थे कि कहीं इस मामले को मुद्दा बना देश के नवनियुक्त 'देवराज' जयश्री मोदी कहीं उनकी सरकार पर ग़लत निगाह न डाल दें। देश के एक पूर्व हुक्काम और अब भाजपा सांसद ने यूपी को राष्ट्रपति शासन के लिये सबसे फिट केस बता दिया था, पर जय श्री मोदी ने इस पर ध्यान नहीं दिया और मुलायम अखिलेश को अभयदान दे दिया। दरअसल, अब अमेरिका उन्हें सादर आमंत्रित करने जा रहा है, जो कई वर्षों से उन्हें वीज़ा तक नहीं दे रहा था। दुनिया के बड़े-बड़े हुक्मरान मोदी का स्वागत करने को तैयार हैं। ऐसे में, वे रेप-शेप जैसी मामूली बातों पर कहां तक ध्यान दें।

दूसरी सबसे महत्वपूर्ण बात ये है कि बलात्कार सनातन हिंदू संस्कृति का हिस्सा रहा है। अछूत व दलित कन्याओं के साथ बलात्कार करना 'देवपुत्रों' का परमाधिकार रहा है और इसे चुनौती नहीं दी जा सकती। मुलायम-अखिलेश द्वापर युग के यदुवंश के आधुनिक प्रतिनिधि हैं। यूपी के शासक हैं। और वहां धर्म के रक्षक हैं। उनके 'सुशासन' पर सवाल उठाना लोग़ों को और मीडिया को शोभा नहीं देता। मीडिया से गुज़ारिश है कि वो अपनी हद में रहे। बलात्कार की सनातन संस्कृति पर सवाल खड़ा करना अधर्म होगा। मुलायम ने साफ़ कहा था कि बलात्कार कोई ऐसा अपराध नहीं जिसके लिए फांसी की सज़ा दी जाए। उन्होंने कहा था कि लड़कों से गलती हो जाती है 'जवानी की भूल'। उनके प्रति उदारवादी दृष्टिकोण अपनाना ही उचित होगा। भूलना नहीं होगा कि मुलायम अखिलेश समाजवादी हैं-वामपंथियों के स्वाभाविक मित्र । ये अलग बात है कि उनका झंडा लाल नहीं, पर टोपी तो लाल है। आज उनका पूरा कुनबा यूपी की सत्ता पर काबिज़ है और सदा-सर्वदा के लिए काबिज़ रहे, मुलायम की मुख्य चिंता यही है। भगवा ब्रिगेड ने चुनावों में उनकी कमर तोड़ दी है तो क्या हुआ, खांटी पहलवान और समाजवादी अभी पूरी तरह चित नहीं हुआ है। मुलायम का समाजवाद विशुद्ध देशी समाजवाद है। रेप बहुत मामूली बात है। सामाजिक परिवर्तन के लिए दलित कन्याओं की बलि चढ़ाना कोई बड़ी बात नहीं। रोज ही रेप हों और हत्या के बाद पीड़िताओं की लाश बिजली के खंबों पर लटकाई जाए तो मुलायम-अखिलेश की लाल टोपी का रंग और भी खिलेगा। फ़िर बलात्कार सिर्फ़ मुलायम-अखिलेश राज की खासियत नहीं है। अखिलेश के पूर्व दलित देवी मायावती के राज में उनके ही एक मंत्री ने दलित बालिका की अस्मत लूटी थी। क्या हुआ? हरियाणा में हुड्डा का राज है। वहां रोज़ बलात्कार होते हैं और विहनसंतोषी हंगामा करते हैं तों क्या हुआ? हुड्डा जाएंगे और कोई दूसरा आएगा तो क्या बलात्कार नहीं होंगे। और नहीं होंगे तो सनातन भारतीय संस्कृति का क्या होगा? बंगाल में ममता दीदी का राज है। क्या वहां बलात्कार नहीं होते? होते हैं और नहीं होंगे तो भारतीय संस्कृति की विशिष्ट पहचान मिट जाएगी। संस्कृति को बचाए और बनाए रखना है तो बलात्कार पर सवाल मत उठाओ। और हां, खेत में, खलिहान में, जंगल-बियबान में, दलित बालिका से बलात्कार हो तो कुछ मत बोलो। दलित कन्याओं को भगवान ने श्रेष्ठ जनों के भोग के लिए बनाया है। वो बलात्कार का विरोध कर अपनी जान ख़तरे में मत डालें, सरकार ये चेतावनी जारी कर दे। वैसे, दिल्ली-मुंबई-पटना में किसी खाती-पीती लड़की का बलात्कार हो तो आसमान जरूर सिर पर उठाओ। कैंडल मार्च करो। दामिनी नाम का इतिहास बनाओ। खाते-पीते घरों की ओर यूनिवर्सिटियों में पढने वाली लड़कियां द्विज वर्ण की होती हैं। उन पर हाथ डालना महा पाप। संस्कृति के विरुद्ध। उनका बलात्कार करने वालों को फांसी दो। दलित कन्या का बलात्कार पुण्य कार्य।

लेकिन सपा प्रमुख मुलायम सिंह यादव जी और सीएम अखिलेश यादव जी, महिला जज के साथ घर में घुस कर बलात्कार का प्रयास, ये क्या है! इसे रोकें। देवतागण अप्रसन्न हो जाएंगे हां, दलित कन्याओं के साथ बलात्कार हो, उनकी हत्या हो, उन्हें जिंदा जला दिया जाए, कोई फ़र्क नहीं पड़ता बेफ़िक्र रहें। सिर्फ़ इतना ख़्याल रखें कि उच्च वर्ग और उच्च वर्ण की महिलाओं पर आपके गुंडे निग़ाह न डालें। ऐसा हुआ तो हंगामा ज़्यादा होगा और आपके लिए मुसीबत बढेगी। दलितों की परवाह करने की जरा भी जरूरत नहीं। इसके लिए बहन जी मायावती हैं।

डॉक्टर लोहिया की आत्मा जहां भी होगी, अति प्रस्न्न होगी। आपका समाजवाद फले-फूले। हमारी इच्छा है कि पंचतत्व में विलीन होने के पहले आप जरूर इस महान देश के प्राइम मिनिस्टर बनें।

कट्टरपंथी हिन्दुत्ववादी संगठनों पर लगाम लगाने की आवश्यकता

-जुगल किशोर गुप्ता

भाजपा को स्पष्ट बहुमत और एनडीए को भारी सफलता मिलने पर केन्द्र में मोदी सरकार की स्थापना होते ही साम्प्रदायिक ताकतों ने अपना सिर उठाना शुरू कर दिया है। हालांकि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने घोषणा की थी कि वे सबको साथ लेकर चलेंगे और सबके साथ एक समान व्यवहार करेंगे तथा भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजनाथ सिंह ने मुसलमानों से समर्थन मांगते हुए कहा था कि वे उनमें विश्वास रख कर देखें। परन्तु सोशल मीडिया फेसबुक व वाटसैप पर शिवसेना के संस्थापक बाल ठाकरे तथा मराठा शासक शिवाजी के अपमाजनक/विवादित/पोस्ट डालने के कारण महाराष्ट्र राज्य के कॉस्मोपोलिटन शहर पुणे में कट्टरपंथी संगठन, विशेषकर आरोपित 'हिन्दू राष्ट्र सेना' तोड़-फोड़ और पथराव पर उतर आई। उसने दो दिनों में लगभग 200 बसों और प्राइवेट कारों को अपना शिकार बनाया और तोड़-फोड़ कर नष्ट कर दी। पुणे में एक संप्रदाय विशेष की दुकानों, रिहायशी घरों, शिक्षण संस्थाओं व धार्मिक प्रतिष्ठानों को नुकसान पहुंचाया। पूरा पुणे शहर डर के साये में डूब गया और तनाव की स्थिति बन गई। गौरतलब है कि यह किसी को नहीं पता कि ये विवादित पोस्ट सोशल मीडिया पर किसने डाले और इसके लिए कौन उत्तरदायी था। हिन्दु राष्ट्र सेना ने इस घटना को अपने साम्प्रदायिकता मंसूबों को पूरा करने के लिए साम्प्रदायिक तांडव करना शुरू कर दिया।

सोलापुर के निवासी 28 वर्षीय सॉफ्टवेयर इंजिनियर मोहसिन मुहम्मद सादिक शेख पुणे में किसी निजी कम्पनी में आई टी इंजिनियर नियुक्त था। दो जून को वह अपने भाई और मित्र रियाज़ के साथ रात को वापिस अपने घर जा रहा था। उस समय हिन्दु राष्ट्र सेना के लगभग 30-40 गुंडे मोटर साइकिलों पर घूम रहे थे, उन्होंने रास्ते में इंजिनियर मोहसिन सादिक और उसके साथियों को देखा। उनमें से लगभग 25 लोग़ों ने मोहसिन सादिक को घेर लिया और छड़ों व हॉकी स्टिक से पीटना शुरू कर दिया। सादिक जख्मी होकर ज़मीन पर नीचे गिर पड़ा, परन्तु तब भी उन्होंने सादिक को नहीं छोड़ा और बड़ी निर्दयता से उसकी हत्या कर दी। इस दौरान सादिक का भाई अपनी जान बचाकर वहां से भागने में सफल हो गया। इस दर्दनाक घटना की एक विशेष बात उल्लेखनीय है कि मोहसिन सादिक शेख के मित्र रियाज़ पर कोई आक्रमण नहीं किया गया क्योंकि उसके दाढ़ी नहीं थी और उसने सादिक की तरह टोपी भी नहीं पहनी थी। उस दिन मोहसिन मुहम्मद सादिक शेख ही उस उन्मादी भीड़ का अकेला शिकार नहीं बना था। उन्मादी भीड़ ने मोहसिन सादिक से पहले अमीन हारून शेख पर हमला किया था लेकिन वह मरने का नाटक करके अपनी जान बचाने में सफल हो गया। इस भीड़ ने पथराव भी किया। इन घटनाओं से स्पष्ट प्रमाणित होता है कि उन्मादी भीड़ का असली मकसद मुसलमानों को मारना और उनको नुकसान पहुंचाना था। इसके अतिरिक्त आक्रमण कारियों ने मोहसिन सादिक की हत्या करने के बाद मोबाईल फोन के ज़रिए एक संदेश ज़ारी किया जिसमें लिखा था 'पहला विकेट गिरा'। आरोप है कि यह संदेश उसी कट्टरपंथी हिन्दुत्व संगठन 'हिंदु राष्ट्र सेना' के सदस्यों ने फैलाया जिसके सदस्य मोहसिन सादिक की हत्या के आरोपी हैं। हिंसा भड़काने के लिए अब तक 100 से भी ऊपर लोग गिरफ़्तार किए जा चुके हैं जिनमें हत्या के आरोप में हिन्दु राष्ट्र सेना के 21 लोग शामिल हैं। गौरतलब है कि हिन्दू राष्ट्र सेना के अध्यक्ष धनंजय देसाई पर पुणे शहर के विभिन्न थानों में दंगे कराने व भड़काऊ भाषण देने के 20 अपराधिक मामले दर्ज हैं। देसाई को भी गिरफ़्तार किया गया है तथा उस पर भी हत्या का आरोप लगाया गया है। यह बहुत भयावह और विचित्र स्थिति है कि सूचना व तकनीकी क्रांति के उपकरण फेसबुक व वाटसैप के कारण एक निर्दोष आई.टी. इंजीनियर की पुणे में हत्या की गई और एक संप्रदाय विशेष को उन्माद का शिकार बनाया गया जबकि उक्त अपमानजनक विवादित पोस्ट से उनका किसी भी तरह का कोई सम्बन्ध नहीं था। उक्त घटनाओं से इंगित होता है कि कट्टरपंथी हिन्दुत्ववादी सगठनों को विश्वास हो गया है कि अब सत्ता पर उनका कब्जा है, उनको सब प्रकार के अधिकार प्राप्त हैं और वे अल्पसंख्यकों के साथ मनमाना व्यवहार कर सकते हैं। आश्चर्यजनक है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व भाजपा अध्यक्ष व केन्द्रीय गृह मंत्री राजनाथ सिंह ने एक निर्दोष इंजिनियर नवयुवक की हत्या व पुणे में उन्माद फैलाने की कोई निंदा करने की अपेक्षा रहस्यमय चुप्पी साध रखी है। इसके विपरीत भाजपा के स्थानीय सांसद अनिल शिरोले ने उक्त घटना को फेस बुक पर कुछ दिन पहले हुई एक बेनाम शरारत की 'स्वभाविक प्रतिक्रिया' बताया। बिना किसी कारण के एक निर्दोष नवयुवक का कत्ल और धार्मिक पहचान के आधार पर अकारण फेलाए गए उन्माद व उत्पात पर इस तरह का ब्यान देना जले पर नमक छिड़कने जैसा है। गौरतलब है कि 1984 में सिख दंगे व 2002 में गुजरात नरसंहार के मद्देनज़र राजीव गांधी व नरेन्द्र मोदी ने भी ऐसे ही बयान दिए थे। अभी समय है, मोदी सरकार अपनी चुप्पी छोड़कर हिन्दु राष्ट्र सेना जैसे कट्टरपंथी संगठनों पर लगाम लगाए जिससे देश में पुणे जैसी घटनाएं भविष्य में नहीं घटे।

तुर्की-ब-तुर्की

''हमने देश की बागडोर ऐसे समय में संभाली है जब पिछली सरकार ने कुछ नहीं छोड़ा है। वे सब खाली करके गए हैं।

राष्ट्रीय हित में कड़े फैसले लेने का वक्त आ गया है। हो सकता है कि कुछ लोगों को अभी ये फैसले अच्छे न लगें।

हमारा कहना है :

- इसके लिये भूमिका बांधने की जरूरत नहीं है मोदी जी हमें पता है कि देश की वित्तीय सेहत रसातल में जाने से आपका मतलब अम्बानियों और अड़ानियों की वित्तीय सेहत से है जो आपके चुनाव में हजारों करोड़ खर्च करके हल्की सी खराब हुई है। उसको सुधारने के लिए देश की जनता को तो आप निचोड़ेंगें ही।
- आपके लिए फैसले अम्बानियों और अडानियो को तो बुरे लगने से रहे। तो निश्चित रूप से यह नसीहत देश की गरीब जनता को ही दी जा रही है। ताकि उनको मानसिक रूप से तैयार किया जा सके कि ये कड़े फैसले उनके और देश के हित में है।
- अगर खजाना खाली है और कड़े फैसले ही लेने है तो फिर अम्बानियों को गैस के दुगुने दाम क्यों दिये जायें। क्यों नहीं उन्हें इससे भी आधे दाम पर गैस देने को कहा जाये। क्यो नहीं अम्बानी का हजारों करोड़ का घर देश हित में जब्त कर लिया जाये। क्यों नहीं काले धन को वापस लाकर खाली खजाना भर लिया जाये। क्यों नहीं अडानी, वाड्रा, डीएलएफ आदि को लगभग मुफत बांटी गई जमीन जब्त कर ली जाये या देश हित में कुर्बानी सिर्फ गरीबों के ही नाम लिखी हैं
- वैसे आपके कडे फैसले अम्बानियों ने पहले ही तय कर रखे हैं – डीजल व खाद्य सब्सिडी को खत्म करना, मजदूर कानूनों में संशोधन करके उनको मजदूरों के और शोषण लायक बनाना, भूमि अधिग्रहण और पर्यावरण कानूनों में संशोधन करके पूरे देश के प्राकृतिक संसाधनों की पूंजीपतियो द्वारा लूट सुनिश्चित करना आदि। लेकिन याद रखना भारत की जनता भी फिर कड़े फैसले लेने में देर नहीं लगायेगी – कि आपको फौरन गददी से उतार दिया जाये।

मोदी जी कहते हैं,

''मुझे सांसदों का मेरे पैर छूना पसंद नहीं। जब कोई मेरे पैर छूता है तो मैं असंतुलित हो जाता हूं।''

हमारा कहना है:

- सांसदों ने भी तो आप जैसों से ही सीखा है मोदी जी। आप भी तो राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ और भाजपा में प्रभावशाली वरिष्ठों के पैर छू-छू कर ही तो आगे बढे हैं।
- चुनाव जीत कर संसद भवन में पहली बार घुसते हुए आपने प्रवेश द्वार की सीढ़ियों पर माथा टेकने का जो नाटक किया था, क्या उसका प्रभाव आपकी पार्टी के तमाम दूसरे सांसदों पर नहीं पड़ेगा? वे भी तो इन्हीं दिखावटी अदाओं को अपनायेंगे। आपका पैर ना भी छूयें तो भी चापलूसी और गणेश परिक्रमा में वे भला पीछे क्यों रहने वाले हैं।
- आपका यह डर बिल्कुल ठीक है कि पैर छूने वाले आपको असंतुलित करते हैं। आपने भी तो यही किया है- जिस-जिस के पैर आपने छूए उस-उस को खींच कर जमीन पर पटका है। जैसे बघेला, केशुभाई पटेल, मुरली मनोहर जोशी, लालकृष्ण आडवाणी, इत्यादि इत्यादि। पैर तो आप अटल बिहारी वाजपेयी का भी खींचते पर उनके अस्वस्थ हो जाने से आपको यह जहमत उठानी ही नहीं पड़ी।